इबादात और तालीम का तरीका (रसूलुल्लाहﷺ की ज़िन्दगी से)

मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

राहे अमल हिन्दी.

‘नोट:- हदीष की रिवायत का खुलासा है.’

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

* मुस्लिम, रावी हज़रत जाबिर बिन समुरा रदी.

में रसूलुल्लाहﷺ के साथ नमाज़ पढता था, आप की नमाज़ भी ना ज़्यादा लम्बी और ना छोटी होती थी और खुतबा भी ना बहुत लम्बा और ना बहुत छोटा होता था.

* बुखारी, रावी हज़रत अबू कतादा रदी.

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया कि में नमाज़ के लिए आता हूं और जी चाहता हे कि में लम्बी नमाज़ पढाउं, फिर किसी बच्चे के रोने की आवाज़ कानमे पडती हे तो नमाज़ को मुख्तसर कर देता हूं क्यूकी मुझे ये बात पसन्द नहीं हे कि नमाज़ लम्बी कर के बच्चे की मां को ज़हमत में मुबतला करू. आपﷺ के ज़माने

में औरतें भी मस्जिद में आती और नमाज़ जमात के साथ पढती थी, उन में बच्चों वाली मायें भी होती, घर पर कैसे छोडती, इस हदीस में इन्हीं बच्चों और औरतों के बारे में फरमाया गया हे. इसमे उन इमामों के लिए सबक हे जो मुकतदियों के हालात से बेखबर होकर लम्बी किरत फरमाते हे.

* बुखारी, रावी हज़रत ज़ियाद रदी.
हज़रत मुगीरा (रदी) को बयान करते सुना कि रसूलुल्लाहﷺ तहज्जुद की नमाज़ में खडे रहते यहा तककी आपके दोनों पाँव सूज जाते. उसपर लोग कहते कि इतनी ज़हमत आप क्यू उठाते हे? उनको जवाब देते कि क्या में शुक्रगुज़ार बन्दा ना बनु.

* बुखारी, रावी हज़रत आयशा रदी.
रसूलुल्लाहﷺ लोगो को ऐसे ही काम करने का हुक्म देते थे जिसे वो कर सकते जो उनके बसमे होता.

* मुस्लिम, रावी हज़रत मुआविया बिन हकम सुलमी रदी.
में रसूलुल्लाहﷺ के साथ नमाज़ पढ रहा था कि इतने में एक

आदमी को छीक आई तो मेने नमाज़ पढते ही मेने यरहमुकल्लाह कह दिया तो लोगो ने मुझ पर निगाह डाली, मेने कहा कि अल्लाह तुम्हे जिन्दा रखे, तुम लोग क्यू मुझे देखते हो, तो उन्होंने मुझे चुप हो जाने के लिए कहा, तो में चुप हो गया. जब आपﷺ नमाज़ पढ चुके, मेरे मां बाप आपﷺ पर कुर्बान, मेने आपﷺ से बेहतर तालीम व तरबियत करने वाला ना तो पहले देखा ना बाद में देखा. आपﷺ ने ना तो मुझे डांता ना मारा और ना बुरा भला कहा, सिर्फ इतना कहा ये नमाज़ हे इसमे बात चीत मुनासिब नहीं हे, नमाज़ तो नाम हे अल्लाह की पाकी बयान करने का, उस्की बडाई बयान करने का और कुरान पढने का.

* बुखारी, रावी हज़रत अबू हुरैरा रदी.
एक बददु ने मस्जिद में पेशाब कर दिया तो लोग मारने पीटने के लिए दौडे रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया उसको छोड दो, उसके पेशाब पर एक डोल पानी डाल कर बहा दो, तुम लोग तो इसलिए भेजे गए हो कि दीन की तरफ लोगो को खींचो और दीन को उनके लिए आसान बनावो. तुम्हे इसलिए अल्लाह ने

नहीं भेजा हे कि अपने गैर हकीमाना तरीके से लोगो के लिए दीन की तरफ आना मुश्किल बना दो. आपﷺ ने हज़रत अबू मूसा और हज़रत मुआज़ (रदी) को यमन भेजते वकत ये वसियत फरमाई, तुम दोनों वहां के लोगो के सामने दीन को इतनी खूबसूरती से पेश करना कि वो उन्हें आसान मालूम हो, ऐसा ढंग ना अपनाना जिसके नतीजे में दीन को लोग मुश्किल समझने लगे और लोगो को अपने से मानूस करना, ना उन्हें अपने से बिदकाना और ना भडकाना.

* बुखारी व मुस्लिम, रावी हज़रत मालिक बिन हुवैरिस रदी. हम कुछ हमउम्र नवजवान दीन का इल्म हासिल करने के लिए रसूलुल्लाहﷺ के पास आए, यहा हम 20 दिन तक ठहरे. आपﷺ बहुत ही रहीम और नर्म मामला करने वाले थे. आपﷺ ने महसूस किया कि हम अपने घर जाना चाहते हे तो आपने हमसे पूछा कि तुम्हारे पीछे कौन लोग हे? हमने बताया, तो आपने फरमाया कि अपने बीवी बच्चो में वापस जावो और जो कुछ तुमने सीखा हे उन्हें सिखावो, और भली बाते बतावो, और फला-फला नमाज़ वकत पर पढो.

एक रिवायत में ये भी हे, और तुमने मुझे जिस तरह नमाज़ पढते देखा हे उसी तरह तुम भी पढना और जब नमाज़ का वकत आ जाए तो तुममे से कोई अज़ान देदे और जो तुममे इल्म और सीरत के लिहाज़ से बढा हुआ हो वो इमामत करे.